

संगीत के प्राचीनतम ग्रंथों में लगभग पचास विभिन्न प्रकारों की वीणाओं का उल्लेख किया गया है, उन्हीं में से एक का नाम है 'शत-तंत्री-वीणा'; ऐसी वीणा जिसमें तारों की संख्या सौ हो. संतूर इसी मूल शब्द शत-तंत्री का परवर्त्ती काल में अपभ्रंश शब्द है. 'सामवेद' में 'वाण' के नाम से भी इसका उल्लेख है जो 'सामगान' में 'वेणु' और 'वीणा' के अतिरिक्त संगत के रूप में प्रयोग होता था. ग्रीस और बुल्गारिया में इसी तरह के वाद्य यंत्र को 'संतीर' कहा जाता है. इस वाद्य के मूल उद्भव के बारे में अभी तक कोई विश्वसनीय और प्रामाणिक तथ्य तो उपलब्ध नहीं हैं लेकिन आमतौर पर विद्वानों की धारणा है कि इसकी सामयिक लोकप्रियता के बावजूद वस्तुतः यह एक पुराना भारतीय वाद्य है और प्राचीन समय से ही काश्मीर का एक जनप्रिय लोक-वाद्य रहा है.

तंत्री वाद्य संतूर एक जोड़ी वाद्यावर्ती संदशिकाओं ॥सलाइयों॥ द्वारा बजाया जाता है. इसमें सौ तंत्रियाँ होती हैं जो संगीत के 25 स्वरों को व्यक्त कर सकने में सक्षम होती हैं. ये सभी तंत्रियाँ एक विशेष काष्ठ के विषम चतुर्भुजीय आकार के सندوق जैसे ढाँचे में पंक्तिबद्ध होती हैं. प्राचीनकाल में संभवतः तंत्रियाँ वर्म-तंतुओं ॥तांत॥ से निर्मित होती थीं लेकिन आजकल इसके लिए लौह या पीतल का प्रयोग होता है. आजकल संतूर के आकार प्रकार में परिवर्तन हुआ है और सौ तारों के स्थान पर सुविधा के लिए 75 और 50 तारों का भी प्रयोग होने लगा है.

संतूर का गहरा जीवंत/संगीतिक स्वर अत्यंत होता है और प्रमुख रूप से यह उल्लासपूर्ण संगीत रचना की सौन्दर्य के लिए अधिक उपयुक्त होता है. इस वाद्य में तंत्रियों की इतनी अधिक संख्या इसकी साधना को जटिल और श्रम साध्य बना देती है. संभवतः यही कारण है कि बहुत कम कलाकार ही इसे अपना पाते हैं. पंडित शिवकुमार शर्मा इस वाद्य के ऐसे प्रथम वादक हैं जिन्होंने इसे शास्त्रीय संगीत की संभावनाओं से पिराया है.

ओम प्रकाश चौरसिया.

सागर मध्यप्रदेश 1946 में जन्मे श्री ओम प्रकाश चौरसिया उन दो प्रख्यात युवा संगीतकारों में से एक हैं जिन्होंने उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत को संतूर जैसे वाद्य से समृद्ध किया. इन्हें संगीत की प्रेरणा और संगीत की प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता श्री मदन चौरसिया और संगीत विद्वान श्री प्रताप मास्टर से मिली संतूर का गहन प्रशिक्षण इन्होंने प्रसिद्ध संगीतज्ञ स्व. पंडित तालमणि मिश्र के निर्देशन में किया.

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक प्राप्त श्री चौरसिया ने कला और संगीत गायन की स्नातक उपाधि 1969 और 1970 में ली. इसके बाद इसी विश्वविद्यालय से 1972 संगीत गायन की स्नातकोत्तर उपाधि भी. अपनी विशिष्ट प्रतिभा के अनुरूप ही एक बार फिर स्वर्ण पदक प्राप्त करते हुए इसी वर्ष बम्बई में आयोजित "कला के कलाकार" संगीत समारोह में इन्हें इनके सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिए "सुरमणि" की उपाधि से अलंकृत किया गया. 1974-1975 में भारत सरकार द्वारा श्री चौरसिया का चयन छात्रवृत्ति प्रदान करने के लिए हुआ जिसके दौरान इन्होंने प्रख्यात संगीतज्ञ स्वर्णीय पंडित तालमणि मिश्र से संतूर का प्रशिक्षण प्राप्त किया. 1979-1980 में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा इन्हें संतूर जैसे जटिल और प्राचीनतम वाद्य यंत्र के वादन में नई तकनीक एवं प्रविधियों के विकास के लिए "उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत फेलोशिप" प्रदान की गई. यह तकनीक अपेक्षाकृत सरल, प्रभावशाली और सविदनशील है.

श्री ओम प्रकाश ने देश के कई अत्यंत महत्वपूर्ण संगीत सम्मेलनों में भाग लिया है. "स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन वृंदावन," "कला के कलाकार संगीत समारोह बंबई," "संगीत परिषद् वाराणसी," "तानसेन संगीत समारोह ग्वातियर," अलाउद्दीन खाँ स्मृति समारोह मैहर, मध्यप्रदेश कला परिषद् भोपाल द्वारा आयोजित "उत्सव 79" जैसे मान्य और बिरले आयोजन इसके उदाहरण हैं.

अपनी सृजनात्मक संगीत रचना के प्रदर्शन के लिए श्री चौरसिया ने कई बार नेपाल और यूरोपीय देशों की यात्रा की और इन्होंने "रायल नेपाल अकादेमी," "राष्ट्रीय सभा गृह," भारतीय और स्थित दूतावास, काठमांडू, म्युजि गिमें पेरिस में भी अपनी संगीत प्रतिभा को प्रदर्शित कर सम्मान अर्जित किया. पेरिस में इनके संतूर वादन का एक लाइव प्लेइंग रिकार्ड जून 1981 में रिलीज किया जा चुका है.

श्री चौरसिया ने 3 वर्ष तक स्व. डा. लालमणि मिश्र के निर्देशन में "साम-गान और भक्ति संगीत गायन" जैसे महत्वपूर्ण बड़े प्रोजेक्ट के अंतर्गत रिसर्च असिस्टेंट के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वाद्य संगीत के लिए कार्य किया. इन्होंने "म्युजि द लोम" पेरिस की संग्राहक प्रसिद्ध नृत्य शास्त्रज्ञ श्रीमती जेनेवीव को मध्य भारत के आदिवासी संगीत और उनके वाद्य यंत्रों को एकत्र करने के लिए विशेष सहयोग भी प्रदान किया.

ओम प्रकाश ने संतूर वादन में नयी कल्पना शीलता को साकार किया है. नवाचार के लिए सीमित दायरा होने के बावजूद स्वर की समरसता को संवर्द्धित करने और गूँथुरता को सान्द्र करने में उन्हें अद्भुत सफलता मिली है. संतूर के सारे तारों पर उनकी डाँडियों के संघटन में सुस्पष्ट कला अनुशासन और सौन्दर्यशास्त्री प्रयोगशीलता है. मूल रूप से लोक वाद्य संतूर को ओम प्रकाश ने अपने वादन से नयी सांगीतिक सार्थकता दी है. उन्होंने शास्त्रीय संगीत के कठोर सैद्धान्तिक व्यवहार और लोक संगीत की जीवन्तता के बीच रचनात्मक समन्वय कर सांगीतिक नवाचार की नयी दिशा का संधान किया है. संतूर पर कठिन और दुर्लभ रागों को समग्र सौन्दर्य कल्पना के साथ स्तंभित करने में ओम प्रकाश को यशस्वी सफलता मिली है. संतूर पर लोकधुनों के लालित्य को उभारने में वे अनन्य हैं.

इस समय ये उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादेमी भोपाल में सहायक संचालक के पद पर कार्यरत हैं और कलाओं के नये घर भारत भवन भोपाल में शास्त्रीय और लोक संगीत के लिए स्थापित 'अनहद' के मानसेवी संगीत संग्राहक और मध्यप्रदेश कला परिषद् के संगीत सलाहकार भी हैं.

"आपके संतूर के कार्यक्रम का ऐप अपने स्टुडियो में सुनता रहता हूँ बड़ी शान्ति
 सिताती है जैसे दूर से धरती से ही निकले एक पवित्र झरने की गति और राग.
 मुझे खुशी है कि आप मेरी सिंदरी में इस खूबसूरती से आये.".....
 एक गूँगे दर्द की तरह देश की याद आती है कुछ भी कहना बेकार है।

—सैयद हैदर रज़ा, पेरिस.

"॥ संतूर में ॥ भिन्न नम्बर के तारों के कारण स्वरवैविध्य रंजनकारी बनता
 था. चौरसिया जी अतिशय तन्मयतापूर्ण वादन करते हुए स्वरों को गूँज में
 खो जाते हैं."

—दिनमान, दिल्ली.

"वैसे अभी इस वाद्य के वादक इने-गिने ही हैं, जिनमें तेजी से उभरता एक
 नाम है मध्यप्रदेश के ओम प्रकाश चौरसिया. चौरसिया ने अपने प्रदर्शन के लिए
 एक अप्रचलित राग चुना — चन्द्रनील. समूचा
 प्रदर्शन ओम प्रकाश चौरसिया द्वारा हासिल की गई महारत का सबूत था."

—नई दुनिया, इन्दौर.

"इनके वादन में वहाँ एक और कल्पनाशील स्वर विन्यास का प्रदर्शन था, वहीं
 तब पर अच्छा अधिकार था. गतों में उनकी तात् अंग पर सज-
 बूत पकड़ परिलक्षित होती थी.

— करंट बंबई.